6433

सं ग्रो. वि/एफ.डी/2/36-84/29179 — चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की शाये है कि मैं. विकास फोर्राज्यस प्रा. लि., प्लाट नं 173, सैंक्टर-24, फरीदबाद के श्रमिक गनेशी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीदागिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का ग्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्य्याल इसके द्वारा सरकारी श्रीधमूचना सं. 5415—3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जन, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिमूचना सं. 11495-जी.-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संविधत नीचे लिखा गामला न्यायिन र्णय के जिये निर्दिष्ट करते हैं कि जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त माला है या विवाद से मुसंगत श्रथवासंबंधित प्रमालता है:-

क्या श्री गर्नेशी की सेवाओं का समापन न्यांयोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

मं स्रो. वि/एफ डी./2/36-84/29186.—चंकि राज्यपाल, हिरयाणा की राये है कि मैं विकास फोर्राज्य प्रा. लि. प्लाट मं. 173, सैक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री राम भवन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में काई स्रोद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल जिवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं,

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई भक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपान इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अभ-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी अम-57/11245. दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायलय फरीदावार, को विवाद अस्त या उससे मुसंगत या उससे मंबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा संबंधित मामना है:-

बया श्री राम भवन की सेवाओं का समापन व्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ? 🧵

मं. श्री. वि/एफ डी./2/36---84/29193.-च्रिक राज्यपाल, हरियाणा की राये है कि मैं. विकास फोर्राजसा प्रा. लि. प्लाट नं. 173, सैक्टर-24, फरीदावादकेश्रमिक श्री राम चन्द्र तथा उसके प्रगन्धकों के मध्य इसमें इसके वाय लिखित मामले के सम्बन्ध में काई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपात विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद शिव्यतियम, 1947 की धारा 10की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जन, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी. श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरनरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रेम त्यायालय, फरीदानाद की विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायेनिणय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है,

क्या श्री राम चन्द्र की सेवाग्रों का समापन त्यायीचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनीक 8 ग्रगस्त, 1984

संन्योः वि/सोनीपत/36-84/29307. - चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. ब्रारगैनों कैमीकल इण्डस्ट्रीज-एम-3, इण्डस्ट्रीयल ऐस्यि, सोनीपत के श्रमिक श्री बलजीत तथा उसके प्रबत्धकों के बीच इसमें बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को सायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिय, अब, भीद्योगिक विवाब अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल, इसवी द्वारा सरकारी अधिसूचा सं. 96411-i-श्रम/:0/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3844-ए एस आे ई. श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादयस्त या उससे मुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच था तो विवादयस्त मामला है या उक्त विवाद से सुमंगत या स बंधित मामला है:---

क्या श्री बलजीत की सेवाग्रों का समापन त्यायंचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्रो. वि./सोनीपत/84/29314.—चूंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. बारगैनो कैमीकल इण्डस्ट्रीज, एम−3, इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, सोनीपत, के श्रीसक श्री राम वहादुर तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इ समें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीकोणिक विवाद है;

स्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल िवाद को न्योयनिर्णय हैत निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं,

इस लिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रीद्यनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रीधसूचना सं 3864-ए. एस. श्रो. ई. श्रम-70/13648, दिनांक 8 पई, 1970 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करते हैं जो कि स्वत प्रश्नधनी तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

ें क्या श्री राम बहादुर की सेवाओं का समापन न्याययोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

र्स. मो. वि/सोनोपत/84/29321.---चूंकि हरियाणा के राज्यवाल की राये है कि मैं. ग्रारगैनो कैमीकल इण्डस्ट्रीज, एम-- 3, इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, सोनीवत, के श्रमिक, श्रो सुबे सिंह तथा उसके प्रयन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भूगोद्योगिक विवाद है,

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यानिर्णय हेतु निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, अौद्योगिक विवाद प्रधितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) को खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतमों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641-1-%म/70/3257? रिगांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं 3864-ए.एस. श्रो. ई. श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहत हं, को विवादप्रस्त या उससे मुसंगत या उससे पंत्रिक्ष तीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धक तथा श्रामक के बोब या तो विवादप्रस्त मामला है या उना अविवाद से मुसंगत या संबंधित मामला है:--

क्या श्री मुने सिंह, की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं . ओ. वि /सोनीपत 84/29328 -- चूकि हरियाणा के ट्राज्यणाल की रार्थ है कि मैं. आरगै तो कैमीकल इण्डस्ट्रीज एम-3, इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, सोनीपत के श्रमिक श्री अदालत शाह तथा इस के प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीचौनिक विवाद हैं:

भीर चूँकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, मब, मोलोगिक विवाद भिंधितियम, 19.7 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्याल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पिटत सरकारी श्रिधिसूचना सं. 3864-ए एस. श्रो ई श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उनत श्रिधितयम की धारा 7 के श्रेधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहाक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा नामला न्यायिनियम होत, निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत संबंधित भामला है :--

नया श्री भवालत शाह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?